छुटकारे का इतिहास – भाग 3

अध्याय 18: छुटकारे के इतिहास में देना

डॉ. डेविड प्लॉट

यदि आपके पास बाइबल है– और मेरी आशा है कि आपके पास है– तो मेरे साथ 1 इतिहास 29 पर आएँ। पिछले सप्ताह विश्वास के परिवार के रूप में एक साथ बिताए गए समय के लिए मैं कृतज्ञ हूँ। कई लोगों ने मुझे बताया कि वह समय आपके लिए कितना अर्थपूर्ण और सामर्थी समय था। सोमवार दोपहर को मैं भोजन कर रहा था– केन्या से आए पाँच भाइयों और बहनों के साथ मैं अपने उपवास को समाप्त कर रहा था, जो रविवार की आराधना में हमारे साथ थे और वे केन्या में कम्पैशन के भागीदार हैं।

वे अत्यधिक निर्धनता में बढ़े और अब कॉलेज से स्नातक प्राप्त कर रहे हैं और अपनी संस्कृतियों को प्रभावित कर रहे हैं और अपने परिवारों की आवश्यकताओं को पूरा कर रहे हैं– अतुल्य कहानियाँ। और हम विभिन्न विषयों पर बात कर रहे थे, और एक बिन्दू पर उन्होंने मुझ से पूछा, उन्होंने कहा, "क्या तुम अक्सर यह करते हो? क्या इसी तरह एक साथ उपवास करते हो?" और मैं ने कहा, "वास्तव में, नहीं। यह हमने पहली बार किया था। मेरा विचार है कि कुछ लोगों के लिए यह उनका पहला उपवास था, और यह कुछ ऐसा था जिसे हमें अधिक करने की आवश्यकता है और हम इसे अधिक करेंगे।"

और इसलिए मैं ने उनसे पूछा। मैं ने पूछा, "क्या तुम लोग इस तरह एक साथ अत्यधिक उपवास करते हो?" और मेज पर अचानक चुप्पी छा गई, और उनमें से एक ने कहा, "हमारी कलीसिया में, हम प्रत्येक वर्ष को 28–दिवसीय उपवास के साथ शुरू करते हैं।" "ओह, ठीक है। मैं इसे हाँ के रूप में लूँगा। हाँ, हम आगे इसे करेंगे, लेकिन हम एक दिन के साथ शुरू कर रहे हैं, और फिर जनवरी तक हम 28 दिनों के लिए तैयार हो जायेंगे।"

और मेरी आशा है कि हम आने वाले दिनों में इसे और अधिक करेंगे। स्पष्टतः पिछले सप्ताह मैं ने प्रचार नहीं किया और अब मैं उस समय की भरपाई कर रहा हूँ। हमारे बाइबल अध्ययन में इस सप्ताह हम 1 इतिहास 29 पर हैं, जहाँ इस पद में देने पर बल दिया गया है, और यह परमेश्वर के लोगों द्वारा देने की तस्वीर है। और मेरा मन तुरन्त उन बातों पर गया जिन्हें मैं ने देने के बारे में कुछ सप्ताह पूर्व एक गुप्त कलीसिया में छह या सात घण्टों तक सिखाया था। और मेरे अध्ययन में कुछ बातें थीं, सुसमाचार और सम्पत्तियों और समृद्धि को देखते हुए, मैं ने सोचा, "जब भी मुझे समय मिलेगा, इन बातों को मैं केवल गुप्त

कलीसिया में ही नहीं सिखाऊँगा। इन बातों को हमें विश्वास के परिवार के रूप में देखने की आवश्यकता है।" कुछ महत्वपूर्ण बातें– कुछ बातें जिन पर मेरा मन गया और अध्ययन के दौरान उनमें थोड़ा रूपान्तरण हुआ।

और इसलिए आज मैं चाहता हूँ कि हम 1 इतिहास 29 को देखें। मैं चाहता हूँ हम छुटकारे के इतिहास में इस बिन्दू पर देने की तस्वीर को देखें, और फिर हम सम्पूर्ण छुटकारे के इतिहास में देने के बारे में देखें। और मैं चाहता हूँ कलीसिया के रूप में हम कुछ ऐसी बातों की गहराई में उतरें जिन्हें मैं सोचता हूँ कि वे देने के संबंध में हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। और इसलिए हम 1 इतिहास 29 को पढ़ेंगे, हम इस कहानी को देखेंगे।

और फिर इसके आधार पर हम देखेंगे परमेश्वर के लोगों के रूप में सम्पूर्ण छुटकारे के इतिहास में आज देने के संबंध में हम कहाँ पर हैं। इसलिए आइए हम 1 इतिहास 29:1 से शुरू करें।

फिर राजा दाऊद ने सारी सभा से कहा, "मेरा पुत्र सुलैमान सुकुमार लड़का है, और केवल उसी को परमेश्वर ने चुना है; काम तो भारी है, क्योंकि यह भवन मनुष्य के लिए नहीं, यहोवा परमेश्वर के लिए बनेगा। मैं ने तो अपनी शक्ति भर, अपने परमेश्वर के भवन के निमित्त सोने की वस्तुओं के लिए सोना, चाँदी की वस्तुओं के लिए चाँदी, पीतल की वस्तुओं के लिए पीतल, लोहे की वस्तुओं के लिए लोहा, और लकड़ी की वस्तुओं के लिए लकड़ी, और सुलैमानी पत्थर, और जड़ने के योग्य मणि, और पच्चीकारी के काम के लिए भिन्न–भिन्न रंगों के नग, और सब भाँति के मणि और बहुत सा संगमरमर इकट्ठा किया है। फिर मेरा मन अपने परमेश्वर के भवन में लगा है, इस कारण जो कुछ मैं ने पवित्र भवन के लिए इकट्ठा किया है, उस सब से अधिक मैं अपना निज धन भी जो सोना चाँदी के रूप में मेरे पास है, अपने परमेश्वर के भवन के लिए दे देता हूँ। अर्थात् तीन हजार किक्कार ओपीर का सोना, और सात हजार किक्कार तायी हुई चाँदी, जिससे कोठरियों की दीवारें मढ़ी जाएँ। और सोने की वस्तुओं के लिए सोना, और चाँदी की वस्तुओं के लिए चाँदी, और कारीगरों से बनानेवाले सब प्रकार के काम के लिए मैं उसे देता हूँ। अब कौन अपनी इच्छा से यहोवा के लिए अपने को अर्पित कर देता है?"

तब पितरों के घरानों के प्रधानों और इस्राएल के गोत्रों के हाकिमों, और सहस्रपतियों और शतपतियों, और राजा के काम के अधिकारियों ने अपनी अपनी इच्छा से, परमेश्वर के भवन के काम के लिए पाँच हजार किक्कार और दस हजार दर्कनोन सोना, दस हजार किक्कार चाँदी, अठारह हजार किक्कार पीतल, और

एक लाख किक्कार लोहा दे दिया। जिनके पास मणि थे, उन्होंने उन्हें यहोवा के भवन के खजाने के लिए गेर्शोनी यहीएल के हाथ में दे दिया। तब प्रजा के लोग आनन्दित हुए, क्योंकि हाकिमों ने प्रसन्न होकर खरे मन और अपनी इच्छा से यहोवा के लिए भेंट दी थी; और दाऊद राजा बहुत ही आनन्दित हुआ।

तब दाऊद ने सारी सभा के सम्मुख यहोवा का धन्यवाद किया, और दाऊद ने कहा, "हे यहोवा! हे हमारे मूल पुरूष इस्राएल के परमेश्वर! अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू धन्य है। हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ और वैभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा! राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान ठहरा है। धन और महिमा तेरी ओर से मिलती है, और तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है। सामर्थ और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं, और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है। इसलिए अब हे हमारे परमेश्वर! हम तेरा धन्यवाद करते और तेरे महिमायुक्त नाम की स्तुति करते हैं।

"मैं क्या हूँ और मेरी प्रजा क्या है कि हम को इस रीति से अपनी इच्छा से तुझे भेंट देने की शक्ति मिले? तुझी से तो सब कुछ मिलता है, और हम ने तेरे हाथ से पाकर तुझे दिया है। तेरी दृष्टि में हम तो अपने सब पुरखाओं के समान पराए और परदेशी हैं; पृथ्वी पर हमारे दिन छाया के समान बीत जाते हैं, और हमारा कुछ ठिकाना नहीं। हे हमारे परमेश्वर यहोवा! वह जो बड़ा संचय हम ने तेरे पवित्र नाम का एक भवन बनाने के लिए किया है, वह तेरे ही हाथ से हमें मिला था, और सब तेरा ही है। हे मेरे परमेश्वर! मैं जानता हूँ कि तू मन को जाँचता है और सिधाई से प्रसन्न रहता है, मैं ने तो यह सब कुछ मन की सिधाई और अपनी इच्छा से दिया है; और अब मैं ने आनन्द से देखा है कि तेरी प्रजा के लोग जो यहाँ उपस्थित हैं, वे अपनी इच्छा से तेरे लिए भेंट देते हैं। हे यहोवा! हे हमारे पुरखा अब्राहम, इसहाक और इस्राएल के परमेश्वर! अपनी प्रजा के मन के विचारों में यह बात बनाए रख और उनके मन अपनी ओर लगाए रख। मेरे पुत्र सुलैमान का मन ऐसा खरा कर दे कि वह तेरी आज्ञाओं, चितौनियों और विधियों को मानता रहे और यह सब कुछ करे, और उस भवन को बनाए, जिसकी तैयारी मैं ने की है।"

तब दाऊद ने सारी सभा से कहा, "तुम अपने परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद करो।" तब सभा के सब लोगों ने अपने पितरों के परमेश्वर यहोवा का धन्यवाद किया, और अपना अपना सिर झुकाकर यहोवा को और राजा को दण्डवत् किया। दूसरे दिन उन्होंने यहोवा के लिए बलिदान किए, अर्थात् अर्घों समेत एक हजार बैल, एक हजार मेढ़े और एक हजार भेड़ के बच्चे होमबलि करके चढ़ाए। उस दिन यहोवा के सामने उन्होंने बड़े आनन्द से खाया और पिया।

आइए हम प्रार्थना करें। पिता, हम जानते हैं कि हम धनी लोग हैं, विशेषतः शेष संसार और शेष संसार में हमारे भाइयों और बहनों की तुलना में। हम उस भोजन के लिए आपकी स्तुति करते हैं जो आज हमारे लिए उपलब्ध है, जल जो आज हमारे लिए उपलब्ध है, हमारे ऊपर की छत के लिए, हमारे वस्त्रों के लिए। हम इनमें से किसी भी बात को हल्के में नहीं लेते हैं। उनके लिए और इन सबसे बढ़कर उन संसाधनों की बहुतायत के लिए हम आपका धन्यवाद करते हैं जो आपने हमें दिए हैं।

और आज हम प्रार्थना करते हैं, विशेषतः एक भौतिकतावादी संस्कृति के बीच में, कि अपने आत्मा के द्वारा अपने वचन से आप हमारे मन और मस्तिष्क को बदलकर अपने साथ एक बनाएँ; हमें ऐसे लोग बनाएँ जो अपने आपको आपकी महिमा के लिए दे दें। छुटकारे के इतिहास में हम इस प्रकार देने के लिए इच्छुक हैं जिससे आपका सम्मान हो और आपको महिमा मिले, इसलिए हमारी प्रार्थना है कि आज आप हमें सिखाएँ।

हमारे ह्रदयों को बदल दे कि हम अपने पूरे दिल से, पूरी इच्छा से दें, जैसा हम यहाँ देखते हैं – इससे भी बढ़कर दें जैसा हम यहाँ देखते हैं – कलवरी के क्रूस पर हमारे लिए मसीह के बलिदान के आधार पर। यीशु के नाम में हम प्रार्थना करते हैं। आमीन।

पुरानी वाचा में देने के बारे में तीन विचार। वहाँ से हम आरम्भ करेंगे। और यह तस्वीर, जिसे आप 1 इतिहास 29 के आरम्भ में देखते हैं वहाँ दाऊद अपनी भेंट दे रहा है। और फिर आप देखते हैं लोग अपनी विशाल भेंटों को देते हैं। जब आप पद 7 पर आते हैं वहाँ लिखा है उन्होंने पाँच हजार किक्कार और दस हजार दर्कनोन सोना, दस हजार किक्कार चाँदी इत्यादि दिया – किक्कार और दर्कनोन, ये हमारे लिए परिचित माप नहीं हैं।

और इसके बारे में वाद–विवाद भी रहा है कि इन सबका क्या अर्थ है, परन्तु इसका सबसे अच्छा अनुमान है 190 टन सोना, 375 टन चाँदी, 675 टन पीतल, 3,750 टन लोहा। हम लाखों पाउण्ड के सोने और चाँदी और पीतल और लोहे की बात कर रहे हैं जिन्हें उस दिन दिया गया। यह एक अच्छा भेंट का दिन था। यह एक मजबूत रविवार है जब वे लाखों पाउण्ड की इन सारी वस्तुओं को चढ़ा रहे हैं।

और जो मैं चाहता हूँ कि आप देखें– जो इस पद्यांश के बारे में मुझे पसन्द है– वो यह कि इतनी अधिक उदारता से देने पर दाऊद कैसे प्रत्युत्तर देता है। वह यह नहीं कहता, "देखो, लोग कितने महान हैं, या भेंटें कितनी बड़ी हैं।" इसके विपरीत, अपने प्रत्युत्तर में वह अपना मुँह स्वर्ग की ओर उठाकर यहोवा की स्तुति

करता है और कहता है, "देखो परमेश्वर कितना महान है।" आप इसे देखते हैं– पुरानी वाचा में देने के बारे में पहला विचारः देना परमेश्वर द्वारा संचालित है, परमेश्वर–केन्द्रित है, और परमेश्वर की महिमा के लिए है।

देना परमेश्वर द्वारा संचालित, परमेश्वर–केन्द्रित, और परमेश्वर की महिमा के लिए है। पद 10 में वह प्रार्थना करता है, "हे यहोवा, तू धन्य है। हे यहोवा, महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ, और वैभव, तेरा ही है।" एक लेखक ने कहा, "दाऊद ने परमेश्वर को विभिन्न विशेषताओं के नाम और गुण देने के लिए धर्मविज्ञानी शब्दकोष को छान मारा।" सम्पूर्ण तस्वीर यह है कि वह लोगों के देने के द्वारा परमेश्वर की महिमा कर रहा है।

मैं चाहता हूँ कि आप यहाँ दाऊद की प्रार्थना में उभरने वाली कुछ सच्चाईयों को देखें। पहली– इस प्रार्थना में, दाऊद हमें दिखा रहा है कि परमेश्वर सारी वस्तुओं का स्वामी है, और हम उसके भण्डारी हैं। परमेश्वर सारी वस्तुओं का स्वामी है; हम उसके भण्डारी हैं। पद 11 को देखें, "हे यहोवा! महिमा, पराक्रम, शोभा, सामर्थ और वैभव, तेरा ही है; क्योंकि आकाश और पृथ्वी में जो कुछ है, वह तेरा ही है; हे यहोवा! राज्य तेरा है।" पद 12, "धन और महिमा तेरी ओर से मिलती हैं, और तू सभों के ऊपर प्रभुता करता है। सामर्थ और पराक्रम तेरे ही हाथ में हैं, और सब लोगों को बढ़ाना और बल देना तेरे हाथ में है।" पद 14, "मैं क्या हूँ और मेरी प्रजा क्या है कि हम को इस रीति से अपनी इच्छा से तुझे भेंट देने की शक्ति मिले? तुझी से तो सब कुछ मिलता है, और हम ने तेरे हाथ से पाकर तुझे दिया है।" क्या आपने इसे देखा? वह कह रहा है कि हम ने जो कुछ दिया है वह वैसे भी तेरा ही है। परमेश्वर सारी वस्तुओं का स्वामी है। यह पवित्रशास्त्र की चमकती सच्चाई है।

आपका घर और आपकी कार और आपका टीवी और आपके वस्त्र, और इस प्रकार आप स्वयं परमेश्वर के हैं। आपका बटुआ और जो कुछ उसमें है वह परमेश्वर का है। आपका बैंक खाता और जो कुछ उस में है वह परमेश्वर का है। और इसलिए हम जो कुछ भी उसे देते हैं वह पहले से ही उसका है। अब यह इस प्रकार है कि आपके पास एक अच्छी कार है, और आप उसे कुछ दिनों के लिए मुझे चलाने के लिए देते हैं, और मैं उसे आपके पास वापस लाकर कहता हूँ, "मेरे दिल की गहराई और उदारता के साथ, यह कार मैं तुम्हें देना चाहता हूँ।" आप मेरी ओर देखकर यदि कहें नहीं तो भी सोचेंगे जरूर, "तुम्हारी उदारता के लिए धन्यवाद, लेकिन यह वैसे भी मेरी ही है।" वास्तविकता यह है, हम परमेश्वर को जो कुछ देते हैं वह पहले से ही परमेश्वर का है। हम इसके भण्डारी हैं। इसे बताने का दूसरा तरीका, "परमेश्वर सारी वस्तुओं का दाता है, और हम उसके दास हैं।" इसका अर्थ है इसे देने वाला परमेश्वर है इसलिए उसके पास यह कहने

का अधिकार है कि इसके साथ क्या किया जाए। हमारा अपने धन पर मालिकाना हक नहीं हैं; हम केवल दास हैं।

जिस प्रकार यीशु हमार द्वारा लिए जाने वाले प्रत्येक निर्णय पर प्रभु है– कलीसिया, हमें इसका अहसास है। हमारे जीवन की दिशा का निर्धारण करने का अधिकार हमने खो दिया है। यीशु हमारे मार्गों को निर्देशित करता है। यीशु हमारे प्रत्येक निर्णय को निर्देशित करता है, और न केवल हमारे प्रत्येक निर्णय को– बल्कि हमारे प्रत्येक रूपए का निर्धारण करता है जिसे हम खर्च करते हैं। हमारे व्यय का नियन्त्रण हमारे हाथ में नहीं है; हमारे व्यय का नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में है। वह अगुवाई करता है। वह मार्गदर्शन करता है। वह कहता है, "इसे ऐसे खर्च करना है।"

वह स्वामी है। वह दाता है। हम भण्डारी हैं। हम सेवक हैं। यही सम्पूर्ण तस्वीर है। दाऊद यहाँ पर यही प्रार्थना कर रहा है ज बवह कहता है कि कैसे यह सब कुछ परमेश्वर का है और जो कुछ वे परमेश्वर को देते हैं वह परमेश्वर से ही आता है, और वे इसीलिए दे रहे हैं क्योंकि परमेश्वर उनके दिलों को देने के लिए प्रेरित कर रहा है। देना परमेश्वर द्वारा संचालित, परमेश्वर–केन्द्रित और परमेश्वर की महिमा के लिए है।

दूसरा विचारः परमेश्वर के लोग आनन्द के कारण देते हैं, जिम्मेदारी के कारण नहीं। पद 9, "तब प्रजा के लोग आनन्दित हुए क्योंकि उन्होंने अपनी इच्छा से यहोवा को भेंट दी थी।" उन्होंने उदारता से यहोवा को भेंट दी थी। पद 17, "हे मेरे परमेश्वर, मै जानता हूँ कि तू मन को जाँचता है और सिधाई से प्रसन्न रहता है, मैं ने तो यह सब कुछ मन की सिधाई और अपनी इच्छा से दिया है; और अब मैं ने आनन्द से देखा है कि तेरी प्रजा के लोग जो यहाँ उपस्थित हैं, वे अपनी इच्छा से तेरे लिए भेंट देते हैं।" आप अन्त में पद 22 पर आते हैं, "उस दिन यहोवा के सामने उन्होंने बड़े आनन्द से खाया और पिया।"

इसी तस्वीर को हम 2 कुरिन्थियों 8 में नये नियम में देखते हैं, परन्तु यह यहाँ पुराने नियम में है। हर्ष से देने वालों से परमेश्वर प्रेम करता है। परमेश्वर हर्ष से देने वालों को बनाता है। परमेश्वर हर्ष से देने वालों पर दबाव डालता है। लोग ऐसा नहीं कह रहे हैं, "पुराने नियम में देना एक जिम्मेदारी थी। यह व्यवस्था द्वारा संचालित था।" क्या यह जिम्मेदारी जैसा दिखता है? यह एक उत्सव है। यह आनन्दपूर्ण उत्सव और देना है। दूसरा विचारः परमेश्वर के लोग आनन्द के कारण देते हैं, जिम्मेदारी के कारण नहीं।

फिर तीसरा विचारः हमारा देना सदैव हमारे दिलों से जुड़ा होता है। पद 9 में, उनके अपनी इच्छा से देने के बारे में बात करते समय दाऊद कहता है अपने पूरे दिल से अपनी इच्छा से उन्होंने यहोवा के लिए दिया है। जब आप पीछे पद 5 पर जाते हैं, आप देखते हैं दाऊद निमन्त्रण देता है। अब कौन अपनी इच्छा से यहोवा के लिए अपने को अर्पित कर देता है? इसका अर्थ है कौन अपना मन यहोवा के लिए समर्पित करेगा?

और हम देखते हैं कि उदारता से देना परमेश्वर–केन्द्रित हृदय का बहाव है; यानि दिल हमारे देने से जुड़ा है। यही हम नये नियम में भी देखते हैं, क्या नहीं? यीशु कहता है, "जहाँ तुम्हारा धन है, वहाँ तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।" हमारा मन और हमारा धन हमेशा एक साथ चलते हैं। जहाँ हमारा धन है वह दिखाता है हमारा मन कहाँ है – यह एक नम्र करने वाली सच्चाई है, क्या नहीं? जहाँ हमारा धन है वह दिखाता है हमारा मन कहाँ है। हमारा देना सदैव हमारे दिलों से जुड़ा होता है।

अब मैं चाहता हूँ कि आप मेरे साथ पद 6 में देखें। वह बताता है कि पितरों के घरानों के प्रधानों ने अपनी इच्छा से दिया। इच्छा बलि– आप इसे रेखांकित कर सकते हैं या इस पर निशान लगा सकते हैं। यह पुराने नियम में, पुरानी वाचा के अन्तर्गत एक प्रकार का बलिदान था। अब मैं चाहता हूँ कि हम पुराने नियम के बारे में सोचें, और मैं चाहता हूँ हम सोचें कि कैसे यह तस्वीर– इच्छा बलि– पुराने नियम की भेंटों के अनुरूप है।

आपने तीन प्रकार की पुरानी वाचा की भेंटों को देख लिया है। हमारे पास इन सारे स्थानों पर जाने का समय नहीं है, इसलिए आप उन स्थानों के बारे में लिख सकते हैं जहाँ उनके बारे में बताया गया है। पहले प्रकार की पुराने नियम की भेंट दसमांश थी। दसमांश दिए जाते थे। यहाँ वचनः लैव्यवस्था 27:30. लैव्यवस्था 27:30 कहता है, "फिर भूमि की उपज का सारा दशमांश, चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृक्ष का फल, वह यहोवा ही का है; वह यहोवा के लिए पवित्र ठहरे।"

यहाँ दसमांश का शाब्दिक अर्थ है दसवाँ भाग, 10 प्रतिशत, वह दसमांश था। अब यहाँ लैव्यवस्था 27:30 में तस्वीर यह है कि भूमि की उपज, वृक्षों के फल का दसमांश यहोवा को दिया जाना था। मैं चाहता हूँ आप देखें, कि दसमांश विभिन्न प्रकार के थे– विभिन्न प्रकार के– जिन्हें हम पुराने नियम में देखते हैं जिन्हें परमेश्वर के लोगों को देना था।

पहला दसमांश याजकों और लेवियों की सहायता के लिए दिया जाता था। याजकों और लेवियों की सहायता के लिए दसमांश दिया जाता था। परमेश्वर ने अपने लोगों को विश्वास के समुदाय में आत्मिक अगुवों की सहायता करने की आज्ञा दी थी ताकि वे अपने जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा कर सकें। गिनती 18:21–24 याजकों और लेवियों के लिए दसमांश के बारे में बात करता है; गिनती 18:21–24.

दूसरा, समुदाय में उत्सव मनाने के लिए एक दसमांश दिया जाता था। एक समय था जब सारे लोग एक साथ मिलकर दसमांशों को लाते और पवित्रस्थान में आनन्द मनाते थे। व्यवस्थाविवरण 14:22–33– एक दसमांश समुदाय के उत्सव के लिए दिया जाता था। और फिर तीसरा, अन्ततः, एक दसमांश निर्धनों और जरूरतमन्दों की सहायता के लिए दिया जाता था। एक दसमांश निर्धनों और जरूरतमन्दों की सहायता के लिए दिया जाता था। व्यवस्थाविवरण 14:28–29; व्यवस्थाविवरण 14:28–29. अब यह थोड़ा अलग था। यह पहला दसमांश हर वर्ष दिया जाता था– दसवाँ भाग याजकों और लेवियों की सहायता करने के लिए। दूसरा भी हर वर्ष दिया जाता था– समुदाय के उत्सव मनाने के लिए। फिर यह तीसरा दसमांश जो निर्धनों और जरूरतमन्दों की सहायता के लिए हर तीसरे वर्ष लिया जाता था। व्यवस्थाविवरण 14:28 कहता है तीन वर्ष के बीतने पर तीसरे वर्ष की उपज का सारा दसमांश निकालकर अपने फाटकों के भीतर इकट्ठा कर रखना; तब परदेशी, और अनाथ, और विधवाएँ जो तेरे फाटकों के भीतर हों, वे आकर पेट भर खाएँ। और ये तीन वर्ष में एक बार था, एक दसमांश हर वर्ष दिया जाता था, दूसरा दसमांश हर वर्ष दिया जाता था, और तीसरा दसमांश हर तीसरे वर्ष दिया जाता था।

आप उसे जोड़ें, और आप महसूस करते हैं पुरानी वाचा के अन्तर्गत पुराने नियम में, हम सोचते हैं, "पुराने नियम में लोगों के दसमांश देने का अर्थ है कि वे अपनी आय का दस प्रतिशत देते थे।" परन्तु वास्तविकता है कि आप इन सबको जोड़ें और हर वर्ष का कुल दसमांश लगभग 23 प्रतिशत प्रति वर्ष होता था। दो दसमांश प्रत्येक दसवाँ भाग– 10 प्रतिशत, 10 प्रतिशत, 20 प्रतिशत– और फिर एक दसमांश– तीन वर्षों में 10 प्रतिशत– 3 प्रतिशत– लगभग 23 प्रतिशत प्रति वर्ष।

और परमेश्वर के लोग इसी प्रकार दे रहे थे। और अब मैं यहाँ पर एक छोटी टिप्पणी देना चाहता हूँ। परमेश्वर की प्रजा, इस्राएल की अद्वितीय प्रकृति के कारण, वे एक राज्य थे, और इसलिए वे एक सरकार थे। दसमांश में उनका देना एक प्रकार से करों के समान था, बिल्कुल वैसा ही नहीं लेकिन करों को देने के समान था; और वह एक छोटी सी टिप्पणी है।

परन्तु यहाँ तस्वीर यह है कि उनकी आय का 23 प्रतिशत प्रति वर्ष इसी प्रकार दिया जा रहा था। और यह केवल एक प्रकार की भेंट थी, पुरानी वाचा में एक प्रकार का उपहार। इसलिए मैं चाहता हूँ कि हम अपनी इस सोच को तोड़ें कि पुराने नियम में दसमांश का अर्थ था उनकी आय का दस प्रतिशत, और वह उनके देने की सीमा थी। नहीं। दसमांश यथार्थ में उनकी आय का 23 प्रतिशत था, और वह उनके देने का केवल आरम्भ था।

दसमांश उनके देने का केवल आरम्भ था। यह 23 प्रतिशत उनके देने की छत नहीं थी– यह उनका फर्श था, उदाहरण के रूप में। यह उनके देने का आरम्भ था। इसके अतिरिक्त, इस्राएली दो अन्य प्रकार की पुराने नियम की भेंट को देते थे। पहली, परमेश्वर को सर्वोत्तम भेंट देने के लिए पहले फल की भेंट दी जाती थी। पहले फल की भेंट, जिसका मूल अर्थ है सर्वोत्तम से पहला और आपके सर्वोत्तम में से – इसका एक उदाहरण।

लैव्यवस्था 19:23–25; लैव्यवस्था 19:23–25 दाख की बारी की उपज के पहले फल को देने के बारे में बताता है। निर्गमन 23:16 दाख या अनाज या तेल की उपज के पहले फल को देने के बारे में बात करता है; निर्गमन 23:16. गिनती 15:20–21; गिनती 15:20–21 किसी भी भोजन के पहले फल को देने के बारे में बताता है। और ये पहले फल की भेंटें थी– दसमांश थे, पहले फल की भेंटें थीं, और फिर पुरानी वाचा की तीसरे प्रकार की भेंट, स्वेच्छा बलियाँ जो परमेश्वर को बहुतायत की भेंट चढ़ाने के लिए दी जाती थीं।

और उसी को हम 1 इतिहास 29 में देख रहे हैं। वे यहाँ जो दे रहे हैं वह अत्यधिक और सीमा के पार था, उनके दसमांशों और पहले फल की भेंटों से कहीं बढ़कर था। यह कहीं अधिक था– स्वेच्छा बलि। अब यहाँ मैं आपको कुछ दिखाना चाहता हूँ। मेरे साथ निर्गमन 36 पर आएँ। आपको इसे देखना है। निर्गमन 36:6. मैं आपको यह दिखाना चाहता हूँ कि दसमांश केवल शुरूआती बिन्दू था, और पुराने नियम में व्यवस्था के अन्तर्गत देने का अर्थ दसमांश से कहीं बढ़कर था।

23 प्रतिशत और पहला फल और स्वेच्छा बलि, और मैं चाहता हूँ आप एक तस्वीर को देखें। इसे हम पहले ही 1 इतिहास 29 में देखते हैं, परन्तु निर्गमन 36 की यह तस्वीर मुझे पसन्द है; इस स्वेच्छा बलि को देखें। यह तब था जब परमेश्वर की प्रजा मिस्र के दासत्व से निकल आई थी। वे मिलापवाले तम्बू का निर्माण करने वाले थे, और इसलिए उन्हें भेंटों, स्वेच्छा बलियों, की आवश्यकता थी कि मिलापवाले तम्बू का निर्माण किया जा सके। इसे सुनें।

निर्गमन 36:3.

और इस्राएली जो जो भेंट पवित्रस्थान की सेवा के काम और उसके बनाने के लिए ले आए थे, उन्हें उन पुरूषों ने मूसा के हाथ से ले लिया। तब भी लोग प्रति भोर को उसके पास भेंट अपनी इच्छा से लाते रहे; और जितने बुद्धिमान पवित्रस्थान का काम करते थे वे सब अपना अपना काम छोड़कर मूसा के पास आए, और कहने लगे, "जिस काम को करने की आज्ञा यहोवा ने दी है उसके लिए जितना चाहिए उससे अधिक वे ले आए हैं।"

तब मूसा ने सारी छावनी में इस आज्ञा का प्रचार करवाया, "क्या पुरूष, क्या स्त्री, कोई पवित्रस्थान के लिए और भेंट न लाए।" इस प्रकार लोग और भेंट लाने से रोके गए; क्योंकि सब काम बनाने के लिए जितना सामान आवश्यक था, उससे अधिक बनाने वालों के पास आ चुका था।

आहा! वे अत्यधिक मात्रा में दे रहे थे – और लोगों से यह कहना आवश्यक हो गया, "बस, अब और नहीं।" कलीसिया में वह दिन जब हमें इस प्रकार कहना पड़े, "तुम अत्यधिक उदार हो– बस!"

तुम बहुत अधिक दे रहे हो; हमारे पास आवश्यकता से अधिक है। कितनी महान तस्वीर है! यह स्वेच्छा बलि है। इस पर कोई छत नहीं है। पुराने नियम में दसमांश – देने का केवल फर्श है। यहीं से यह शुरू हुआ। और यह केवल 10 प्रतिशत नहीं था, यह 23 प्रतिशत था। उससे बढ़कर, पहले फल की भेंटें और स्वेच्छाबलियाँ भी थी। और पुराने नियम में यही तस्वीर है। 1 इतिहास 29 इसी के अनुरूप है। प्रश्न उठता है, तो फिर 2010 में परमेश्वर के लोगों के रूप में, इसका हम से क्या संबंध है?

हम पुरानी वाचा के परमेश्वर के लोग नहीं हैं। हमारी तस्वीर बिल्कुल अलग है, और हम जानते हैं जब हम पुरानी वाचा में आज्ञाओं को देखते हैं, तो हमें नई वाचा में देखना चाहिए। और यदि पुरानी वाचा की किसी आज्ञा को नई वाचा में दोहराया गया है, तो हमें इसे मानना है। वह हम पर लागू होती है। परन्तु यदि पुराने नियम की किसी आज्ञा– जैसा हम इन सब प्रकार की बातों में देखते हैं – लैव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण में, यदि ये पुराने नियम में है, परन्तु नई वाचा में इस पर बल नहीं दिया गया है, तो यह स्वतः ही हम पर लागू नहीं होती है। और वहाँ एक प्रश्न आता है,– और यह एक प्रश्न है जिस पर आज हमारी मसीही संस्कृति में हर जगह वाद–विवाद हो रहा है– क्या दसमांश की आज्ञा नई वाचा के

विश्वासियों के लिए दी गई है? क्या नई वाचा के विश्वासियों को दसमांश देना चाहिए? और यहीं पर गुप्त कलीसिया के लिए अध्ययन में डूबना चुनौतिपूर्ण और रूपान्तरित करने वाला था।

इस सम्पूर्ण तस्वीर पर मेरे विचारों को बदल दिया – एक वर्ष पूर्व जब हम 2 कुरिन्थियों 8 और 9 से यात्रा कर रहे थे और देने के बारे में बात करते समय हमने इसे थोड़ा देखा था। परन्तु मैं चाहता हूँ हम इसे पुनः देखें। आइए अब हम नई वाचा में देने की ओर बढ़ते हैं, और मैं पुराने नियम और नये नियम में दी गई तस्वीर के आधार पर आपके सामने तीन निष्कर्षों को रखना चाहता हूँ। पहला– बात यह है– नई वाचा में दसमांश देने की कोई आज्ञा नहीं है।

नई वाचा के अन्तर्गत दसमांश देने की कोई आज्ञा नहीं है। और मैं चाहता हूँ कि आप 1 इतिहास 29 में अपने स्थान को पकड़े रहें क्योंकि हम यहाँ वापस लौटेंगे, परन्तु मेरे साथ लूका 11 पर चलें। लूका 11:42– बात यह है। नये नियम में केवल एक बार दसमांश का वर्णन किया गया है। मैं कहता हूँ एक बार; यह कुछ धार्मिक अगुवों के साथ यीशु का वार्तालाप है, और इसे मत्ती और लूका दोनों ने लिखा है। हम लूका के अभिलेख को देखेंगे।

अतः तकनीकी रूप से दो घटनाएँ हैं, परन्तु वे एक ही परिस्थिति के बारे में बात कर रही हैं। नये नियम में केवल एक ही बार दसमांश का वर्णन किया गया है, और मैं चाहता हूँ आप इसे देखें। लूका 11:42– यीशु धार्मिक अगुवों, फरीसियों से बात कर रहा है। सुनें वह क्या कहता है, "पर हे फरीसियो, तुम पर हाय! तुम पोदीने और सुदाब का और सब भाँति के साग–पात का दसवाँ अंश देते हो, परन्तु न्याय को और परमेश्वर के प्रेम को टाल देते हो; चाहिए तो था कि इन्हें भी करते रहते और उन्हें भी न छोड़ते।"

इसलिए मूलतः यीशु कहता है, "तुम लोग दसमांश देते है– अच्छी बात है। इन बातों को तुम्हें करना चाहिए। परन्तु तुम एक बिन्दू से चूक रहे हो। तुम दसमांश देते हो, और फिर तुम अपने आस–पास के जरूरतमन्दों से जिस प्रकार व्यवहार करते हो वह परमेश्वर के न्याय और प्रेम को दिखाता है। यदि तुम दसमांश देते हो और तुम अपने आस–पास जरूरतमन्दों को अनदेखा करते हो, और तुम उन्हें परमेश्वर के न्याय और प्रेम को नहीं दिखाते हो, तो तुम सम्पूर्ण बिन्दू से चूक रहे हो।" और इसलिए यीशु यहाँ दसमांश की आज्ञा नहीं देता है।

उसका निहितार्थ है कि उन्हें ऐसा करना चाहिए, परन्तु इस बिन्दू पर भी कुछ लोग कहते हैं, "वास्तविकता यह है कि यीशु अब भी पुराने नियम के दायरे में बात कर रहा है। वह क्रूस पर नहीं गया है, हमारे पापों के लिए मरा नहीं है, कब्र से जी नहीं उठा है, अपने आत्मा को नहीं भेजा है, कलीसिया का आरम्भ नहीं किया है। यहाँ पर हम इसे नहीं देखते हैं। यह इन सबके होने से पहले हुआ है, इसलिए वह अब भी पुरानी वाचा के दायरे में धार्मिक अगुवों से बात कर रहा है।"

तो क्या इसका मतलब है कि हमें दसमांश को छोड़ देना चाहिए? कुछ लोग कहते हैं हाँ, क्योंकि नये नियम में इसका और कहीं वर्णन नहीं किया गया है। परन्तु इस बिन्दू पर दसमांश को पूरी छोड़ने से मैं हिचकता हूँ, क्योंकि शेष नये नियम में हम जो देखते हैं वह बहुत रूचिकर है। हम नये नियम की कलीसिया में उन बातों पर बल को विविध रूपों में देखते हैं जिनके लिए दसमांश उपलब्ध कराता था, जैसे अगुवों के लिए प्रबन्ध।

पौलुस की पत्रियों में भी हम इसके बारे मे बातचीत को देखते हैं। जरूरतमन्दों की सहायता करना– इसे हम निश्चित रूप से देखते हैं। वास्तव में, वहीं पर आपको अहसास होता है जब आप नई वाचा के आरम्भ को देखते हैं– ठीक है, प्रेरितों के काम 2 में लोग पहली बार मसीह पर विश्वास करते हैं जब वे पहली बार सुसमाचार के प्रचार को सुनते हैं। और वे भरोसा करते हैं और फिर मन फिराते हैं और बपतिस्मा लेते हैं। पिन्तेकुस्त के दिन आत्मा उतर चुका है। और वह पहली तस्वीर क्या है जो हम देखते हैं?

प्रेरितों के काम 2 में हम जो देखते हैं वह लोगों का दसमांश देना नहीं है। इसके विपरीत वे अपनी सम्पत्तियों को बेच रहे हैं और एक –दूसरे को दे रहे हैं। फिर आप प्रेरितों के काम 4 पर आते हैं और वहाँ लिखा है, "उन सब पर बड़ा अनुग्रह था और उनमें कोई भी दरिद्र नहीं था।" व्यवस्थाविवरण 15 में पुरानी वाचा इसी के बारे में बात करती थी– "तुम्हारे बीच कोई दरिद्र नहीं होगा।" और यहाँ प्रेरितों के काम 4 में, उनके बीच में कोई दरिद्र नहीं था।

क्योंकि– इसे सुनें– लोग, मसीही अपने घरों और अपनी भूमि को बेचकर अपने सारे संसाधनों को ला रहे हैं; उनके बीच में जिनको जरूरत थी उनकी सहायता करने के लिए अपने संसाधनों को ला रहे हैं। और हमें जो महसूस होता है हाँ, नई वाचा के अन्तर्गत दसमांश देने की कोई आज्ञा नहीं है। इसके विपरीत, नई वाचा में देने में पुरानी वाचा में देने से कहीं अधिक बलिदान शामिल है, कम नहीं– बड़ा त्याग, छोटा नहीं।

और लोग कहते हैं– लोग प्रेरितों के काम 4 को पसन्द करते हैं और हम कहते हैं, "अब नया नियम अनुग्रह देता है, और इसी कारण हमें दसमांश को छोड़ देना चाहिए, क्योंकि वह व्यवस्था है। हम अब अनुग्रह देने वाला है।" और यह हमारी संस्कृति में एक तरह से सामान्य है, कलीसिया में और हमारे सन्दर्भ में। हम अनुग्रह देने वाले हैं, व्यवस्था देने वाले नहीं। यहाँ एक समस्या है। हम कहते हैं कि हम अनुग्रह देने वाले हैं, और कहते हैं कि हमें दसमांश को नहीं मानना चाहिए।

एकमात्र समस्या यह है कि एक औसत उत्तरी अमरीकी मसीही अपनी आय का 2.5 प्रतिशत कलीसिया को देता है। मेरा विचार है कि वह संभवतः उदार है, और मेरी आशा है कि हमारे विश्वास के परिवार का यह हाल नहीं है। मेरी आशा है कि यहाँ यह ऊँचा होगा। परन्तु समस्या यह है कि हम अनुग्रह देने के बारे में अत्यधिक बात करते हैं, परन्तु वास्तविकता यह है कि यदि हम केवल पुरानी वाचा में से चुनते और केवल 10 प्रतिशत को लेते। और तस्वीर यह है कि जिन लोगों के पास व्यवस्था थी वे उन लोगों से चार गुना अधिक दे रहे हैं जो कहते हैं कि उनके पास अनुग्रह है। और वास्तविकता है कि यदि हमारे पास मसीह में अनुग्रह होता– 2 कुरिन्थियों 8:9– "जो धनी होकर भी तुम्हारे लिए कंगाल बन गया, अपनी महिमा के सिंहासन को छोड़ दिया कि क्रूस के मार्ग पर चलकर हमारे पापों के लिए मरे और कब्र में से जी उठे।" जो लोग उसके पीछे चलते हैं, जो उसके अनुग्रह को जानते हैं, वे उन लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक उदारता से देंगे जिनके पास केवल व्यवस्था थी।

और यहाँ तस्वीर यह है कि यदि हम व्यवस्था के अधीन लोगों से अधिक त्यागपूर्वक नहीं दे रहे हैं तो हम सम्पूर्ण बिन्दू से चूक गए हैं। जो हमें तीसरे निष्कर्ष पर लाता है, और इसे मैं थोड़ा प्रकट करूँगा; इसे प्रकट करने की आवश्यकता है। परन्तु एक पासबान के रूप में मैं आपके सामने जो रखना चाहता हूँ वह यह कि दसमांश देना नई वाचा के अन्तर्गत देने के लिए एक अच्छा मार्गदर्शन है, परन्तु यह व्यवस्थावादी नियम नहीं है।

यहाँ बहुत अधिक है। और मैं इसे खोलना चाहता हूँ कि मैं यह क्यों कह रहा हूँ। यह व्यवस्थावादी नियम नहीं है; यह एक पासबान अपने लोगों से नहीं कह रहा है, "नये नियम में नई वाचा के अन्तर्गत हमारे लिए एक आज्ञा है जिसे हमें मानना है।" यह ऐसा कहना नहीं है।

परन्तु यहाँ पासबान लोगों से कह रहा है, "मेरा विचार है कि हमें दसमांश को छोड़ना नहीं चाहिए बल्कि यह हमारा मार्गदर्शन करे, हमारी सहायता करे।" मैं इसे स्पष्ट करूँगा। मेरा प्रोत्साहन, सम्पूर्ण छुटकारे के

इतिहास में हमने जो देखा है उसके आधार पर– मैं आपको दिखाऊँगा क्यों– है कि हम देना आरम्भ करें, कलीसिया को 10 प्रतिशत के साथ देना आरम्भ करें। मैं यहाँ पर रूककर हजारों गुण बताना चाहूँगा।

पहली बात मैं इसमें बिल्कुल भी स्वार्थी नहीं बनना चाहता हूँ– मैं कुछ पवित्रशास्त्रों को बताता हूँ और चाहूँगा कि मेरे विश्वास का परिवार अधिक देने लगे। मैं चाहता हूँ कि हम यह देखें कि छुटकारे के इतिहास में हम कहाँ पर हैं, और मैं चाहता हूँ हम इस पर विचार करें कि हम देने के द्वारा कैसे सबसे अधिक परमेश्वर का सम्मान कर सकते हैं। व्यक्ति या परिवार के रूप में मैं चाहता हूँ आप इस बात पर विचार करें कि देने के द्वारा आप कैसे सबसे अधिक परमेश्वर की महिमा कर सकते हैं।

मैं चाहता हूँ हम विश्वास के परिवार के रूप में– विशेषतः एक अत्यधिक धनी भौतिकतावादी संस्कृति में– मैं चाहता हूँ हम इस बात को सुनिश्चित करें कि हम सबसे अधिक अपने देने के द्वारा परमेश्वर की महिमा करने की खोज में रहें। और इसलिए 10 प्रतिशत के साथ कलीसिया को देना आरम्भ करें। मैं एक मिनट में इसे समझाऊँगा। यह देने का फर्श है। पुराने नियम में यह देने का फर्श था। पुराने नियम के सन्तों के लिए, यह स्वतः था; वे परमेश्वर को अपना पहला और सर्वोत्तम देते थे।

और मुझे नहीं पता कि नये नियम के मसीह के अनुयायी उससे कम कैसे दे सकते हैं। मसीह के अनुग्रह के द्वारा रूपान्तरित किसी व्यक्ति के लिए यह कैसे संभव है कि वह पुराने नियम में प्रत्येक सन्त से की गई माँग से भी कम दे, चाहे उसकी आय का स्तर कितना भी हो? उससे कम देने का हमारे लिए कोई मतलब नहीं होगा, और इसलिए यह आरम्भिक बिन्दू है देने का फर्श है। और फिर अपनी बहुतायत के अनुसार उसे बड़े प्रतिशत से बढ़ाते जाएँ।

मैं आपसे मूलतः यह कहना चाहता हूँ जो हम छुटकारे के इतिहास में देख रहे हैं कि दसमांश के साथ शुरू करें, परन्तु परमेश्वर के जनों, रूकें नहीं। आपसे पहले के परमेश्वर के लोग भी वहाँ रूके नहीं थे, और हमारे पास ज्यादा अनुग्रह है। इसलिए दसमांश केवल फर्श हो, फिर महसूस करें कि देने में कोई छत नहीं है। कलीसिया में कहना मैं 10 प्रतिशत तक बढ़ूँगा। आप शुरूआती बिन्दू तक बढ़ते नहीं हैं। आप शुरूआती बिन्दू से आरम्भ करते हैं।

और फिर आप वहाँ से आगे बढ़ते जाएँ, और परमेश्वर से पूछें, "हे परमेश्वर, मैं कैसे उदारता से और त्यागपूर्वक दे सकता हूँ, जिम्मेदारी के कारण नहीं, बल्कि इस बात के लिए आनन्द के कारण जो मसीह ने मुझ में किया है?"

क्योंकि परमेश्वर–केन्द्रित हृदय उदार हाथों को उत्पन्न करता है– जिसे हम सारे पवित्रशास्त्र में देखते हैं– तीन कारण नये नियम में देने में दसमांश क्यों सहायक है। ये तीन कारण है कि मैं एक पासबान के रूप में आपके सामने ऐसी बात को क्यों बता रहा हूँ जिसकी नये नियम में स्पष्ट रूप से आज्ञा नहीं दी गई है।

मैं क्यों सोचता हूँ कि यह एक सहायक निर्देश है? ये तीन कारण– पहलाः क्योंकि दसमांश धर्मशास्त्रीय सिद्धान्त का सम्मान करता है। स्पष्टतः, पुराना नियम इसका वर्णन करता है। पुराने नियम में परमेश्वर के जनों की सारी पीढ़ियों में यह परमेश्वर का नियम था, और यह गम्भीर था। और वे उन्हीं वस्तुओं को उपलब्ध कराने के लिए थे जिन्हें नया नियम हमें भी उपलब्ध करवाने के लिए कहता है– निर्धनों और कंगालों की सहायता, कलीसिया में अगुवों की सहायता।

विविध बातें जिन्हें हम पुराने नियम में देखते हैं उन पर नये नियम में बल दिया गया है। और पुराना नियम इसका वर्णन करता है। दूसरा, यीशु इसका समर्थन करता है। निश्चित रूप से, यीशु ने इसकी आज्ञा नहीं दी, परन्तु धार्मिक अगुवों से कहे गए उसके वचन निश्चित रूप से दसमांश देने का समर्थन करते हैं। "तुम्हें उन्हें करना चाहिए।" वे यह संकेत नहीं देते हैं कि दसमांश को जल्द ही छोड़ दिया जाएगा। जैसे हमने बात की है, वह जो करता है उसके कारण हमें ज्यादा देने की अगुवाई मिलती है, कम की नहीं।

अतः यह बाइबल के सिद्धान्त का सम्मान करता है। पुराना नियम वर्णन करता है, यीशु समर्थन करता है, और यदि मैं इसे एक और कदम आगे ले जा सकूँ, कलीसियाई इतिहास इसका उदाहरण दिखाता है। मसीहियों ने इसका अभ्यास किया है– जैसे 21$^{वीं}$ सदी के परिदृश्य में, विशेषतः अपने सारे धन के साथ, आकर हम यह नहीं कहते हैं, "हमें देने की नई तस्वीरें मिल गई हैं।" जैसे नये नियम के तुरन्त बाद कलीसियाई पुरखे, आइरेनियस ने कहा, दसमांश देना– दसवाँ भाग– कलीसिया की सामान्य रीति थी। कुछ सैंकड़ों वर्षों के बाद, अगस्टीन ने बिल्कुल यही बात कही। उसने बताया दसवाँ भाग कैसे दिया जाता है, और फिर शेष में से उससे कहीं बढ़कर हम भीख में देते हैं। एक और कलीसियाई पुरखे, जेरोम ने कहा, "यदि कोई ऐसा नहीं करता"– दसमांश नहीं देता– "तो उसे परमेश्वर को धोखा देने और परमेश्वर से

छीनने का दोषी माना जाता।" अतः नये नियम के कैनन के बन्द होने के बाद कुछ सैंकड़ों वर्षों तक यह सामान्य था।

नये नियम के विश्वासियों के लिए दसमांश देना सामान्य और बुद्धिमत्तापूर्ण माना जाता था। और बात यह हैः "यदि परमेश्वर के लोगों की पीढ़ियों ने पुराने नियम में छुटकारे के इतिहास में इस व्यवहार को अपने आत्मिक जीवन में इतना महत्व दिया, यदि यीशु ने इसका समर्थन किया, और यदि उन आरम्भिक कुछ सदियों के मसीहियों ने इसे माना, तो मेरा विचार है कि हमें सावधान रहना होगा कि हम इसे छोड़ न दें।" यह बाइबल के एक सिद्धान्त का सम्मान करता है।

दूसरा, यह पुनः बल देता है, दसमांश देना परमेश्वर के स्वामित्व और हमारे भण्डारीपन पर पुनः बल देता है। हम इसे देख चुके हैं। परमेश्वर दसमांश में यही कर रहा था। वह उन्हें सिखा रहा था, वह उन्हें प्रशिक्षण दे रहा था कि वे सारी बातों में उसके स्वामित्व को देखें। जब वे तुरन्त परमेश्वर को अपना पहला और अपना सर्वोत्तम देते, तो यह उन्हें स्मरण दिलाता था कि वह उनका अपना नहीं है। और क्या हमें इसकी आवश्यकता नहीं है?
जब हम अपनी तनख्वाह के चैक को देखते हैं, चाहे वह कितना भी बड़ा या छोटा हो, तो क्या तुरन्त हमें अपने आपको यह याद नहीं दिलाना चाहिए, "यह मेरा नहीं है। यह परमेश्वर का है। मैं इसका भण्डारी हूँ।" आप उस मानसिकता को कैसे बनाए रखते हैं? बिल्कुल यही परमेश्वर कर रहा था। यह उसका कारण का एक हिस्सा है जिसके कारण परमेश्वर ने अपने लोगों को दसमांश दिया था, उन्हें इन बातों का स्मरण दिलाने के लिए। और हमें अपनी संस्कृति में हर बार याद करने की आवश्यकता है जब हमें तनख्वाह का चैक मिलता है।

हम अपने धन के स्वामी नहीं हैं; हम अपने धन के भण्डारी हैं, और इसमें कोई सवाल नहीं कि यह सब परमेश्वर का है। और अपने आप को याद दिलाने का, अपने आप को अनुशासित करने का, और यह याद करने का तरीका कि यह परमेश्वर का है और हम इसके भण्डारी हैं, वह है तुरन्त ही उसका पहला भाग देना। तीसरा कारण कि यह एक सहायक निर्देश क्यों है वो यह कि यह हमें निरन्तर लोभ और हमारें दिलो में भौतिकतावाद के साथ युद्ध में हमारी सहायता करता है।

हम जानते हैं कि हम संसार के सबसे धनवान लोगों में से हैं। धन के लिए संसार के सबसे ऊपरी लोगों में हम हैं, और हमारे पास वे सारे वचन हैं जो हमें धन के खतरों की चेतावनी देते हैं। ऐसे बिन्दू भी हैं जहाँ

पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है कि किसी धनी व्यक्ति के लिए मसीही बनना ही कठिन है; असंभव नहीं, परन्तु कठिन। इसी कारण 1 तिमुथियुस 6 में, पौलुस कहता है, "जो धनी होने की लालसा करता है वह विनाश की ओर बढ़ता है।"

वह केवल धनवान होने की लालसा है। और इसलिए वह बाद में 1 तिमुथियुस 6 में क्या कहता है? वह कहता है, "धनी लोगों को आज्ञा दे"– अब यह आज्ञा है– "धनवानों को आज्ञा दे कि वे अच्छे कार्यों में धनवान बनें, उदार बनें, और बाँटने के इच्छुक बनें।" इससे न चूकें। देना भौतिकतावाद का निदान है। हमारी संस्कृति में देना भौतिकतावाद का निदान है। और तस्वीर यह है कि दसमांश देना धन और सम्पत्तियों के हमारे दिल पर हावी होने की प्रवृत्ति से बचाता है। हम देते हैं।

दसमांश देना हमें अनुशासित करता है, हमारा मार्गदर्शन करता है, हमारी उसमें अगुवाई करता है। इसी कारण विश्वास के परिवार के प्रत्येक सदस्य से मैं कहना चाहूँगा– पवित्रशास्त्र में हमने जो देखा है उसके आधार पर– आपके अपने जीवन और आपके परिवार में कलीसिया को 10 प्रतिशत देने के साथ आरम्भ करने के लिए आपका सहायक निर्देश। यह देने का प्रशिक्षण है। और धीरे–धीरे हम उससे आगे बढ़ते हैं।

मैं जानता हूँ कि आपके बीच में अर्थव्यवस्था के विविध स्तर हैं। मैं जानता हूँ कि आपके बीच में विविध प्रकार के आर्थिक संघर्ष हैं। और मैं उनके प्रति अपनी आँखें बन्द नहीं रखना चाहता। परन्तु वास्तविकता है कि इसे हमने सम्पूर्ण छुटकारे क इतिहास में देखा है। हम उन लोगों के पीछे खड़े हैं जिनके लिए परमेश्वर ने इस रीति से उपलब्ध कराया कि मार्ग में उन्होंने देना सीखा।

अपनी इच्छा से देना, निरन्तर देना, और परमेश्वर की महिमा को प्रकट करने के लिए उदारता से देना; और हमें सावधान रहना होगा कि हम उन सारी बातों को छोड़ न दें जो हमसे पहले हो चुकी हैं और फिर उन सारे कारणों को बताना शुरू न करें कि हम अपने समय में कम क्यों दे रहे हैं। हमें अत्यधिक अनुग्रह दिया गया है, जो हमें इस सबके अन्त में लाता है– नये नियम के देने वालों के लिए तीन प्रार्थनाएँ। और यहाँ पर मैं आपको वापस 1 इतिहास 29– वास्तव में 2 इतिहास 1 पर लाना चाहता हूँ।

बात यह हैः 1 इतिहास 29 के अन्त में पद 18 और 19 में हमने वह पढ़ा जो दाऊद ने किया। जब उसने प्रार्थना की, तो उसने लोगों के लिए निरन्तर देने का हृदय रखने की प्रार्थना की– सुनें उसने क्या कहा। उसने कहा, "अपनी प्रजा के मन के विचारों में यह बात बनाए रख।" और फिर पद 19 में उसने कहा, "मेरे

पुत्र सुलैमान का मन खरा कर दे।" उसने प्रार्थना की कि उनके हृदय सदैव ऐसे ही देने की इच्छा रखें, इसी प्रकार परमेश्वर की ओर लगे रहें।

फिर हम 2 इतिहास 1 पर आते हैं, और मैं चाहता हूँ आप देखें सुलैमान की अगुवाई में क्या होता है। 1 इतिहास 29 के अन्त में दाऊद का देहान्त हो जाता है– 2 इतिहास 1, सुलैमान सिंहासन पर बैठता है, और इस तस्वीर के आधार पर मैं आपके सामने तीन प्रार्थनाओं को रख रहा हूँ जिन्हें मैं अपने स्वयं के जीवन, अपने परिवार और परमेश्वर के जनों के रूप में हमारे लिए कर रहा हूँ, जब देने और छुटकारे के इतिहास की बात आती है। पहली प्रार्थना– हे परमेश्वर, हमें ऐसे मन दे कि हम आपकी आराधना से परिपूर्ण हों। यहीं पर सुलैमान के राज्य का आरम्भ होता है। पद 1 में यह लिखा है, 2 इतिहास 1:1, कि "दाऊद का पुत्र सुलैमान राज्य में स्थिर हो गया, और उसका परमेश्वर यहोवा उसके संग रहा और उसको बहुत ही बढ़ाया।" आने वाले पदों में, वह लोगों को बाहर मिलापवाले तम्बू की ओर ले जाता है जहाँ परमेश्वर की महिमा वास करती है और इसे सुनें– पद 6. "सुलैमान ने वहीं उस पीतल की वेदी के पास जाकर, जो यहोवा के सामने मिलापवाले तम्बू के पास थी, उस पर एक हजार होमबलि चढ़ाए।" यह सुलैमान के राज्य की पहली तस्वीर थी। यह आराधना थी– 1,000 होमबलियाँ। वह बहुत अधिक संख्या में होमबलियाँ हैं। और पहली तस्वीर हम देखते हैं सुलैमान कह रहा है, "मेरा हृदय तेरा है परमेश्वर।" हे परमेश्वर, हमें ऐसे हृदय दे जो आपकी आराधना से पूर्ण हों। भाइयो और बहनो, यहीं पर देना शुरू होता है।

इससे पहले कि हम हम इस या उस प्रतिशत की बात करें, हम इसे अपने जीवनों में व्यवहारिक रूप से करेंगे, शुरूआती बिन्दू है कि हमारे हृदय परमेश्वर की महिमा से और परमेश्वर की आराधना से पूर्ण रहें; जो इस संसार में किसी भी बात से बढ़कर परमेश्वर की आराधना करने की इच्छा रखें। जब तक हम शुरूआती बिन्दू की बात न करें, तक हम जो भी बात कर रहे हैं उसका कोई अर्थ नहीं है। अत्यधिक देने का कोई अर्थ नहीं है, क्योंकि यह हमें अपनी संस्कृति में कभी आगे नहीं ले जाएगा।

यह आपको आगे नहीं बढ़ाएगा, क्योंकि यह आपका और परमेश्वर की महिमा का इन्कार करेगा, और वह मसीहियत की सम्पूर्ण तस्वीर है, जिसे करने के लिए यीशु ने हमें बुलाया है। हे परमेश्वर, हमें ऐसे हृदय दे जो आपकी आराधना से पूर्ण हों। दूसरा, हे परमेश्वर, हमें ऐसे मन दे जो आपकी बुद्धि से पूर्ण हों। इसलिए 1,000 होमबलियों को चढ़ाने के बाद, परमेश्वर सुलैमान के सामने प्रकट हुआ और उससे कहा– पद 7, "जो कुछ तू चाहे कि मैं तुझे दूँ, वह माँग।" और सुलैमान ने परमेश्वर से कहा– पद 8, "तू मेरे पिता दाऊद पर बड़ी करूणा करता रहा और मुझ को उसके स्थान पर राजा बनाया है। अब हे यहोवा परमेश्वर! जो वचन

तू ने मेरे पिता दाऊद को दिया था, वह पूरा हो; तू ने तो मुझे ऐसी प्रजा का राजा बनाया है जो भूमि की धूल के किनकों के समान बहुत हैं।" पद 10– वह इसे माँगता है– आप कहानी को जानते हैं: "अब मुझे ऐसी बुद्धि और ज्ञान दे कि मैं इस प्रजा के सामने अन्दर–बाहर आना–जाना कर सकूँ, क्योकि कौन ऐसा है कि तेरी इतनी बड़ी प्रजा का न्याय कर सके?" जो इतना महान है– और परमेश्वर ने सुलैमान को उत्तर दिया: "तेरी जो ऐसी ही इच्छा हुई, अर्थात् तू ने न तो धन सम्पत्ति माँगी है, न ऐश्वर्य और न अपने बैरियों का प्राण और न अपनी दीर्घायु माँगी, केवल बुद्धि और ज्ञान का वर माँगा है, जिस से तू मेरी प्रजा का जिसके ऊपर मैं ने तुझे राजा नियुक्त किया है, न्याय कर सके, इस कारण बुद्धि और ज्ञान तुझे दिया जाता है।"

यह हमारी बड़ी आवश्यकता है– हृदय जो परमेश्वर की आराधना से पूर्ण हों; मन जो परमेश्वर की बुद्धि से भरे हों। हम जानते हैं कि हम एक ऐसी संस्कृति में रहते हैं जहाँ हम सांसारिक बुद्धि से घिरे हैं, विशेषतः जब हमारे धन खर्च करने की बात आती है। और यह जानने के लिए हमें परमेश्वर की परख की अत्यधिक आवश्यकता है कि हम अपने खातों का कैसे प्रयोग करें।

क्योंकि हम अपने चारों ओर ऐसी महान आर्थिक सलाह को सुनते हैं जो एकत्रित करने, बड़े खलिहानों में इकट्ठा करने, बेहतर वस्तुओं को प्राप्त करने की ओर ले जाते हैं, और हमें सावधान रहना है। हमें परमेश्वर की बुद्धि की आवश्यकता है। इसलिए परमेश्वर, हमें ऐसे हृदय दे जो आपकी आराधना से पूर्ण हों और ऐसे मन जो आपकी बुद्धि से भरे हों। और फिर उससे बहता हुआ– मैं आगे बढ़कर इसे पढ़ता हूँ। इसके ठीक बाद क्या होता है, पद 12 के बीच में।

परमेश्वर कहता है, "मैं तुझे इतनी धन सम्पत्ति और ऐश्वर्य भी दूँगा, जितना न तो तुझ से पहले किसी राजा को मिला और न तेरे बाद किसी राजा को मिलेगा।" आप शेष अध्याय को पढ़ें उसके पास 1,400 रथ, 12,000 घुड़सवार हैं– इतने अधिक रथ और घुड़सवार। और चाँदी और सोना पत्थर जैसे आम बन गए– धन, सम्पत्तियाँ, और आदर। हे परमेश्वर हमें ऐसे हृदय दे जो आपकी आराधना से पूर्ण हों, मन जो आपकी बुद्धि से भरे हों, और फिर हाथ– हे परमेश्वर, हमें ऐसे हाथ दे जो आपके धन के साथ उदार हों – आपकी सम्पत्ति– यह आपकी है।

मैं चाहता हूँ आप यहाँ की प्रगति को देखें। इसे देखें और महसूस करें, भाइयो और बहनो, धन का उचित उपयोग परमेश्वर–प्रदत्त बुद्धि और परमेश्वर–केन्द्रित आराधना पर आधारित है। धन का उचित उपयोग– मैं

इसे एक बार और कहूँगा– धन का उचित उपयोग परमेश्वर–प्रदत्त बुद्धि और परमेश्वर–केन्द्रित आराधना पर आधारित है।

क्योंकि आने वाले दिनों में हम पढ़ेंगे कि सुलैमान की नजर परमेश्वर–केन्द्रित आराधना से हट गई, और उसका हृदय परमेश्वर से दूर हो गया, जो उसे नीचे की ओर सांसारिक बुद्धि के मार्ग पर ले गई जिसके कारण उसने उस धन का दुरूपयोग करना शुरू कर दिया जो उसे सौंपा गया था। और यह सब उसकी आराधना से शुरू हुआ। इसी के बारे में हमने बार–बार बात की है कि पुराना नियम हमें संकेत देता है। हम सबको नये हृदयों की आवश्यकता है।

हमें ऐसे हृदयों की आवश्यकता है जो प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह से जीते हुए और उसके कब्जे में हों, जो यद्यपि धनी होने के बावजूद, हमारी खातिर कंगाल बन गया, ताकि उसके कंगाल होने से हम धनी हो जाएँ। हमें ऐसे हृदयों की आवश्यकता है जो उस उद्धारकर्ता की महिमा से बन्धे हों जिसने क्रूस पर हमारे पापों के लिए मरने के लिए अपने महिमा के सिंहासन को छोड़ दिया, इसलिए नहीं कि हम इस संसार के सारे सुखों के साथ जी सकें, बल्कि इसलिए कि हम इस संसार में अपना जीवन उसकी महिमा के लिए व्यय कर सकें।

और जब हमारे हृदय उसकी महिमा की इच्छा से बन्धे हों, और हम परमेश्वर याचना कर रहे हैं, हम में से प्रत्येक अपने जीवन में, अपने व्यवसायों में, अपनी नौकरियों में, और अपने परिवारों में परमेश्वर से विनती कर रहे हैं– हम परमेश्वर से पूछ रहे हैं, "हमें बुद्धि दे कि हम आपके वचन के अनुसार दे सकें, उसके अनुसार जो आपके सुसमाचार और आपकी महिमा की बढ़ोतरी के लिए सर्वोत्तम है।" परमेश्वर–केन्द्रित आराधना परमेश्वर–प्रदत्त बुद्धि की ओर ले जाती है, जिससे हाथों में उदारता आती है।

क्या हो– यदि परमेश्वर चाहे कि उसका सुसमाचार इस ग्रह के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचे, और उसकी कलीसिया संसार में अवर्णनीय कष्टों के बीच लोगों की सेवा करे और उनसे प्रेम करे? यदि परमेश्वर यह चाहता तो शायद वह अपनी कलीसिया को अत्यधिक संसाधन उपलब्ध करवाता। यही उसने किया है। इस संसार की प्रत्येक जाति तक सुसमाचार पहुँचाने के लिए पर्याप्त और उससे भी अधिक संसाधन यीशु मसीह की कलीसिया में हमारे पास हैं, और मार्ग में, उन लोगों से प्रेम करने और उन लोगों की सहायता करने के लिए भी जिनके पास भोजन और पानी नही है।

अतः प्रश्न है, क्या हम परमेश्वर के अनुग्रह को अनुमति देंगे कि वह हमारी सहायता करे कि हम उन लोगों से कम देने के लिए और बहाने न बनाएँ जो हमसे पहले पुराने नियम में परमेश्वर के लोग थे? क्या परमेश्वर के अनुग्रह के कारण हम अधिक बलिदान करेंगे– शुरू करने के लिए– हम में से किसी भी व्यक्ति के लिए आरम्भ करने के लिए सहायक निर्देश दसमांश देने से, और फिर उससे आगे जाना। मैं जानता हूँ कि मेरे ऐसा कहते ही, ऐसे लोग हैं जो कहेंगे, "मैं यह नहीं कर सकता।" मैं पहले भी इसकी सिफारिश कर चुका हूँ– अच्छी पुस्तक है: *धन, सम्पत्तियाँ, और अनन्तता,* लेखक रेन्डी एल्कोर्न।

और मैं उसके द्वारा लिखी गई कुछ बातों को आपके साथ बाँटना चाहता हूँ। जो उसने कहा है मैं उससे बेहतर इसे नहीं कह सकता हूँ। एल्कोर्न ने लिखा– वह लोगों की आपत्तियों के बारे में बात कर रहा है। "यदि अन्ततः मैं दसमांश देने वाला हूँ– अन्ततः मैं दसमांश देने वाला हूँ, तो मुझे केवल उसकी ओर धीरे–धीरे बढ़ने की आवश्यकता है।" वह कहता है, "मुझ से अक्सर पूछा जाता है, 'यदि मैं कुछ भी नहीं दे रहा था, तो यदि मैं इसकी ओर धीरे–धीरे बढ़ता हूँ, 3 प्रतिशत या 5 प्रतिशत से शुरू करके, तो क्या परमेश्वर को पता नहीं चलेगा?'

एल्कोर्न लिखता है, "यदि मैं तुम से कहता, मुझे दुकानों के ताले तोड़कर एक साल में लगभग एक दर्जन चोरी करने की आदत थी। परन्तु फिर मैं तुम से कहता हूँ, 'इस वर्ष मैं केवल आधा दर्जन चोरियाँ करूँगा। क्या यह बेहतर है?' हाँ, यह बेहतर है, परन्तु आप मुझे क्या करने की सलाह देंगे? परमेश्वर को लूटने का समाधान उसे कम लूटना आरम्भ करना नहीं है– यह लूटने को बन्द करना है। यदि दसमांश परमेश्वर की न्यूनतम अपेक्षा है, तो क्या मैं दसमांश नहीं देना सहन कर सकता हूँ?

वह लिखता है, "जब लोग मुझ से कहते हैं, मैं दसमांश नहीं दे सकता,' तो मैं अक्सर पूछता हूँ, 'यदि तुम्हारी आमदनी 10 प्रतिशत कम हो जाए तो क्या तुम मर जाओगे?' वे हमेशा मान लेते हैं कि नहीं। किसी तरह वे आगे बढ़ने का मार्ग निकाल लेते हैं। यही सबूत है कि वे दसमांश दे सकते हैं। सत्य केवल इतना है कि वे देना नहीं चाहते। एक नास्तिक भी जी सकता है यदि वह अपनी आय का 10 प्रतिशत दे दे। चाहे वे परमेश्वर पर विश्वास न करें, लेकिन वे दसमांश दे सकते हैं। तो मसीहियों को कितना अधिक परमेश्वर पर भरोसा करना चाहिए, और विश्वास के द्वारा आज्ञाकारिता में कदम बढ़ाकर उसको उपलब्ध कराते हुए देखना चाहिए? मैं एक पासबान के रूप में आपकी अगुवाई करना चाहता हूँ– एक बैंक खाते की खातिर नहीं, बल्कि प्रभु के साथ आपकी व्यक्तिगत चाल की खातिर।

विश्वास के समुदाय के रूप में हमारे लिए, और संसार में सुसमाचार और परमेश्वर की महिमा के प्रसार के लिए– मैं हम सब से माँग करूँगा कि हम उदारता से दें। यदि हमारे विश्वास के समुदाय में लोग उन लोगों के समान हों जो छुटकारे के इतिहास में हम से पहले रह चुके हैं जिनके लिए दसमांश देना एक आरम्भिक बिन्दू था? और क्या होगा यदि जो लोग पहले से ही उस बिन्दू पर हैं वे उससे आगे कदम बढ़ाएँ?

मेरी प्रार्थना है कि परमेश्वर उस धन को जो उसने हमें सौंपा है और जिस बुद्धि को देने का उसने वायदा किया है, वह हमारा प्रयोग करे कि हम उसकी आराधना को बर्मिंघम और पृथ्वी की छोर तक फैला दें।